ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

200वीं सदैव सत्य महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती 1824-2024

वर्ष 46 | अंक 32 | पृष्ठ 08 | दयानन्दाब्द 200 | एक प्रति ₹ 5 | वार्षिक शुल्क ₹250 | सोमवार, 10 जुलाई, 2023 से रविवार 16 जुलाई, 2023 | विक्रमी सम्वत् 2080 | सृष्टि सम्वत् 1960853124 |
दूरभाष/ 23360150 | ई-मेल/ aryasabha@yahoo.com | इन्टरनेट पर पढ़ें/ www.thearyasamaj.org/aryasandesh

महर्षि दयानंद सरस्वती की 200वीं जयंती के दो वर्षीय आयोजनों की विश्वव्यापी श्रृंखला

आ. प्र. सभा आस्ट्रेलिया एवं फिजी द्वारा विभिन्न आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं में सफलता पूर्वक संपन्न हुआ वेद प्रचार

दो वर्षीय आयोजन, वैदिक धर्म की वृद्धि एवं विस्तार, धर्म परिवर्तन के कुचक्र पर रोक, युवा पीढ़ि को सुदिशा आदि विषयों पर गोष्ठि, सत्संग एवं विशेष साक्षात्कार आदि विभिन्न कार्यक्रम अत्यंत सफल रहे

2024 में उत्साह पूर्वक आयोजित होंगे 200वीं जयंती के भव्य आयोजन

फिजी, मेलबर्न, सिडनी, ब्रिसबेन एवं आस्ट्रेलिया के अन्य शहरों में शुरु हुई तैयारी

महर्षि दयानंद सरस्वती जी द्वारा स्थापित आर्य समाज संपूर्ण विश्व में वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों का निरंतर प्रचार-प्रसार कर रहा है। मानवजाति को सुदिशा प्रदान करने और उसके समुचित उत्थान के लिए समर्पित आर्य समाज अपने सिद्धांतों, मान्यताओं और परंपराओं को आगे बढ़ाते हुए भारत के कोने-कोने में और विदेशों में यज्ञ, योग, स्वाध्याय, सेवा, सत्संग, साधना और समर्पण के साथ ही अपनी सभी सकारात्मक गतिविधियों के साथ लगातार आगे बढ़ रहा है। महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस को लेकर दो वर्षीय आयोजनों की वृहद श्रृंखला में उपरोक्त सभी गतिविधियां और इनके अतिरिक्त विशेष आयोजन अत्यंत प्रेरणादाई सिद्ध हो रहे हैं।

इस विशेष अनुक्रम में आर्य प्रतिनिधि सभा फिजी के विशेष अनुरोध पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि

- शेष पृष्ठ 7 पर

आर्य प्रतिनिधि सभा फिजी द्वारा आयोजित आर्य समाज लटुका, नौसोरी एवं अनेक अन्य शिक्षण संस्थाओं के प्रागंण में वेद प्रचार कार्यक्रमों के दौरान वहां के अधिकारियों, वरिष्ठ सदस्यों एवं स्कूलों के छात्र-छात्राओं के साथ सामूहिक चित्रों में सभा महामंत्री श्री विनय आर्य जी

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक साहित्य के प्रचार का महत्वपूर्ण प्रयास

लेह लद्दाख में पहली बार विश्व पुस्तक महोत्सव में लगा वैदिक साहित्य का स्टाल

आर्य समाज के सिद्धांत, मान्यता और परंपराओं के मूल में संसार का उपकार करना प्रमुख उद्देश्य और नियम है। इसके लिए आर्य समाज हमेशा भारत के कोने-कोने में और पूरी दुनिया में वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों का प्रचार-प्रसार करता आ रहा है। मानव समाज को सुदिशा प्रदान करने हेतु महर्षि दयानंद सरस्वती जी महाराज द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, संस्कार विधि, व्यवहार भानु, सवमंत्वयामंतव्य प्रकाश, गो करुणानिधि, उपदेश मंजरी आदि अमर ग्रन्थों की प्रेरणा से करोड़ों लोगों को वैदिक सन्मार्ग की प्राप्ति हुई है।

महर्षि दयानंद सरस्वती जी के 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' के उदघोष को साकार करते हुए हमारे महापुरुषों ने हजारों की संख्या में वैदिक साहित्य के रूप में पुस्तकों का सृजन किया है। महर्षि के स्वरचित अमर ग्रंथों सहित वेद, उपनिषद, दर्शन, मनुस्मृति, गीता, रामायण, महाभारत आदि समस्त वैदिक साहित्य को जन-जन तक पहुंचाने के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा लगातार प्रयासरत है। 2 वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला में प्रगति मैदान के बाद 12 से 16 जुलाई 2023 में लद्दाख पुस्तक महोत्सव में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का यह दूसरा पुस्तक मेला है। जिसमें सभा ने पुस्तकों का स्टाल लगाया है।

हालांकि अब तक दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा 74 से ज्यादा पुस्तक मेलों में वैदिक साहित्य के स्टाल लगाए जा चुके हैं, लेकिन लेह लद्दाख में विपरीत वातावरण और अनेक अन्य विषम परिस्थियों के बावजूद वहां पुस्तक महोत्सव में स्टॉल लगाना अपने आप में एक बड़ी चुनौती थी। लेकिन जहां चाह, वहां राह की लोकोक्ति को साकार करते हुए लद्दाख पुस्तक महोत्सव में वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों के प्रचार-प्रसार का शुभारंभ हो गया है। महर्षि दयानंद की शिक्षाओं और आर्य समाज की विचारधारा को जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प साकार हो रहा है।

-सभा महामंत्री

वेदवाणी-संस्कृत

हम वेद के अनुसार कर्म करें

वेद-स्वाध्याय

अव्यसश्च व्यचसश्च बिलं वि ष्यामि मायया।
ताभ्यामुद्धृत्य वेदमथ कर्माणि कृण्महे॥

-अथर्व० 19 । 68 । 1

ऋषिः-ब्रह्मा॥ देवता-कर्म॥ छन्दः-अनुष्टुप्॥

शब्दार्थ- **अव्यसः**=अव्यापक, सान्त, एकदेशी 'अहं' के **च**=भी और **व्यचसः**=व्यापक, अनन्त, बाहर फैले हुए 'त्वं' के **च**=भी **बिलम्**=बिल को, भेदभरे रहस्य को **मायया**=अपनी प्रज्ञा द्वारा **विष्यामि**=खोलता हूँ। **ताभ्याम्**=उन दोनों (अव्यसस् और व्यचसस्) द्वारा **वेदम्**=वेद को, वेदज्ञान को **उद्धृत्य**=ऊपर निकालकर, उद्धृत करके **अथ**=उसके बाद, इस तरह वेद को प्राप्त करने के बाद, हे भाइयो! हम **कर्माणि**=कर्मों को, वैदिक कर्मों को **कृण्महे**=करें।

विनय- यह ठीक है कि हमें वेद-ज्ञान प्राप्त करके उसी के अनुसार कर्म करने चाहिए, परन्तु वेद-ज्ञान को पा लेना कोई आसान काम नहीं है। वेद को तो हमें बड़े गहरे पानी में पैठकर निकालना होगा, उद्धृत करना होगा। जब तक कि हम 'अव्यसम्' और 'व्यचसस्' के, सान्त और अनन्त के, अन्दर और बाहर के, 'अहं' और शेष सब 'त्वं' के भेद को, रहस्य को पूरी तरह न जान गए हों तब तक 'ज्ञान क्या वस्तु है', 'ज्ञान होने का क्या अर्थ है' इसे ही हम नहीं समझ सकते, किन्तु आज प्रभु-कृपा से मैंने तो 'अव्यसस्' और 'व्यचसस्' की घुण्डी को खोल लिया है। अन्दर-बाहर का क्या मतलब है इसे मैंने पा लिया है। सान्त और अनन्त जहाँ पर आकर मिलते हैं उस गुप्त रहस्यस्थान को कपाट खोलकर देख लिया है। मैं देख रहा हूँ कि यह सब कुछ यह सब अनन्त ब्रह्माण्ड मेरी आत्मा में, मुझ अणु में समाया हुआ है और मेरा आत्मा, मेरा अपनापन, मेरा 'अहं' इस सब-कुछ को, इस सब ब्रह्माण्ड को, व्याप्त कर रहा है। सुनने वालों को मेरी ये बातें विचित्र लगेंगी, परन्तु मेरी माया, मेरी उच्च प्रज्ञा द्वारा जो मुझे आज साक्षात् अनुभव हो रहा है उस अनुभव को मैं इस भाषा के अतिरिक्त किसी अन्य प्रकार से प्रकट नहीं कर सकता। अरे, वेद-ज्ञान कहीं पुस्तक में नहीं रखा है। वेद-ज्ञान तो मेरी आत्मा में प्रकाशित होता है और वेद-ज्ञान नित्य सम्बन्ध से परमात्मा में रहता है। जो ज्ञान इन दोनों द्वारा इस आत्मा (अव्यसस्) और उस परमात्मा (व्यचसस्) द्वारा-निकलता है, उद्धृत होता है वही असली वेद (ज्ञान) है और उसी के अनुसार कर्म करना वैदिक कर्म करना है, अतः आओ, भाइयो! अब हम इस प्रकार से ही वेद को पाकर अपने कर्मों को किया करें। इस प्रकार जब हम अपने-आपको उस अनन्त से जोड़कर, अपने क्षुद्र शरीर को इस विश्व-ब्रह्माण्ड से मिलाकर, अपनी परिमित इन्द्रियों को बाहर के व्यापक देवों से समस्वर करके जो कर्म किया करेंगे वे ही कर्म[1] वैदिक होंगे, वेदानुसारी होंगे, सच्चे अर्थों में वेदानुसारी होंगे।

1. देखो-मनु० अ० 12, श्लोक 118 से 126 तक।

-:साभार:- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

संपादकीय

लोकतंत्र की हत्या पर चुनावी जीत का जश्न कैसे मनाया जाएगा?

बंगाल की चुनावी हिंसा पर नेताओं का मौन संवेदनशीलता की समाप्ति का संकेत

पश्चिम बंगाल में पंचायत चुनाव की घोषणा के साथ ही शुरू हुई हिंसा और चुनाव प्रक्रिया जीत-हार के फैसले समाप्त होने के बाद भी का नाम ही नहीं ले रही है। यहां मतदान वाले दिन मतपत्र ही नहीं, मतपेटियां भी लूटी गईं। उन्हें सीवर, नालों, तालाबों में फेंका गया या फिर जला दिया गया। इसके अलावा मतदान अधिकारियों से मतपत्र छीनकर उनमें अपने प्रत्याशियों के पक्ष में मुहर लगाई गई। मतदान अधिकारी असहाय होकर लोकतंत्र को कलंकित करने वाली इस अराजकता को देखते रहे। उनके सामने कोई उपाय नहीं था, क्योंकि मतदान केंद्रों में या तो पुलिस थी ही नहीं या फिर वह निष्क्रिय थी। इसके साथ ही बताया जा रहा है कि 39 लोग इस लोकतंत्र के उत्सव में चुनावी राजनीतिक हिंसा के शिकार होकर मौत के मुंह में समा गए और सैंकड़ों अस्पतालों में उपचाराधीन हैं। बंगाल में पंचायत चुनाव की मतगणना के दिन भी दिनहाटा, हावड़ा, बशीरहाट, कूचबिहार, मालदा, दक्षिण 24 परगना जिले के विभिन्न मतगणना केंद्रों पर बमबाजी झड़पों की खबरें आई, कई जगह सुरक्षाबलों को लाठीचार्ज तक करनी पड़ी। जबकि सोवानगर ग्राम पंचायत में एक मतगणना केंद्र पर एक उम्मीदवार के पति ने मतपेटी लेकर भागने की कोशिश की। इसे लेकर मौके पर हंगामा मच गया। हालांकि बाद में पुलिस ने दौड़ाकर उसे पकड़ लिया।

इस दिल दहला देने वाली चुनावी हिंसा पर कलकत्ता हाइकोर्ट सख्ती दिखाई। कोर्ट ने बी.एस.एफ. आई.जी. और राज्य सरकार से पंचायत चुनावों को लेकर राजनीतिक हिंसा पर एक रिपोर्ट सौंपने का आदेश दिया है। इसके साथ ही कोर्ट ने राज्य सरकार को घायल लोगों को अच्छी चिकित्सा सेवाएं प्रदान करने के आदेश दिए। इस मामले में कलकत्ता हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश टी.एस. शिवज्ञानम की खंडपीठ ने आदेश दिया कि घायलों को सरकारी अस्पतालों में इलाज कराया जाए। साथ ही कोर्ट ने कहा कि, अगर जरूरत पड़ी तो इलाज के लिए राज्य के किसी बड़े अस्पताल में ले जाना चाहिए। इसके अलावा अदालत ने राज्य को मृतक के अंतिम संस्कार में हरसंभव सहायता प्रदान करने का आदेश दिया।

"बंगाल में टी.एम.सी. अपनी जीत का जश्न मनाने में मस्त हो गई है, लेकिन यहां पर विचारणीय बात यह है कि इस रक्त रंजित चुनावी जीत के जश्न में लोकतंत्र की हत्या पर मातम कौन मनाएगा? बात-बात पर लोकतंत्र की हत्या का बखान करने वाला पूरा विपक्ष आज इस असहनीय पीडा के समय मौन क्यों है? विपक्ष की यह मौन साधना क्या लोकतंत्र की हत्या का स्पष्ट संकेत नहीं है? क्या आज सभी विपक्षी दलों के संवेदनाएं मर चुकी हैं ? या फिर बंगाल में जो लोग चुनावी हिंसा की भेंट चढ़ गए अथवा राजनीतिक चुनावी हिंसा का शिकार हो गए, उनका रहनुमा विपक्ष में कोई नहीं बचा? क्या उन मरने वाले और घायलों के परिवार जनों के दुख को भूलकर सत्तारूढ़ टी.एम.सी. और अन्य विपक्षी दल जीत की खुशी में मदहोश हैं? वस्तुतः चुनाव अपनी जगह हैं, प्रचार अपनी जगह है, जीत हार का अपना महत्व है लेकिन जब चुनाव की घोषणा से लेकर, प्रचार-प्रसार और वोटिंग में धांधली और हत्याओं के बावजूद टी.एम.सी. के प्रवक्ताओं द्वारा खुलेआम यह कह देना कि बंगाल में चुनावी हिंसा का पुराना इतिहास है, पहले चुनावों में जितनी हिंसा होती थी इस बार उससे कम हुई है। पहले ज्यादा लोग मरते थे अब कम मरे हैं। इस बात को सुनकर अगर किसी का खून नहीं खौला तो समझो वह खून नहीं बल्कि पानी है। इस पूरे घटनाक्रम से पता चलता है कि आज राजनीति के जीत-हार के खेल में न केवल लोकतंत्र को समाप्त किया जा रहा है बल्कि मानवता को नष्ट किया जा रहा है।"

हालांकि अगर बंगाल पंचायत चुनाव परिणाम की बात करें तो सत्तारूढ़ टी.एम.सी. ने 35 हजार ग्राम पंचायत सीटों पर बढ़त बनाई है, वहीं बी.जे.पी. 9,545 सीटें जीत चुकी है और सी.पी.आई. (एम) 2,885 सीटें जीत चुकी है, कांग्रेस ने 2,498 सीटों पर जीत दर्ज की है। अभी भी वहां वोटों की गिनती चल रही है। जबकि बंगाल में टी.एम.सी. अपनी जीत का जश्न मनाने में मस्त हो गई है, लेकिन यहां पर विचारणीय बात यह है कि इस रक्त रंजित चुनावी जीत के जश्न में लोकतंत्र की हत्या पर मातम कौन मनाएगा? बात बात पर लोकतंत्र की हत्या का बखान करने वाला पूरा विपक्ष आज इस असहनीय पीडा के समय मौन क्यों है? क्या आज सभी विपक्षी दलों के संवेदनाएं मर चुकी हैं? या फिर बंगाल में जो लोग चुनावी काल के गाल में समा गए अथवा राजनीतिक चुनावी हिंसा का शिकार हो गए उनका रहनुमा विपक्ष में कोई नहीं बचा? क्या उन मरने वाले और घायलों के परिवार जनों के प्रति सत्तारूढ़ टी.एम.सी. और अन्य विपक्षी दल जीत की खुशी में मदहोश हैं? वस्तुतः चुनाव अपनी जगह हैं, प्रचार अपनी जगह है, जीत-हार का अपना महत्व है लेकिन जब चुनाव की घोषणा से लेकर, प्रचार-प्रसार और वोटिंग में धांधली और हत्याओं के बावजूद टी.एम.सी. के प्रवक्ताओं द्वारा खुलेआम यह कह देना कि बंगाल में चुनावी हिंसा का पुराना इतिहास है, पहले चुनावों में जितनी हिंसा होती थी इस बार उससे कम हुई है। पहले ज्यादा लोग मरते थे अब कम मरे हैं। इस बात से पता चलता है कि आज राजनीति के जीत-हार के खेल में न केवल लोकतंत्र

- शेष पृष्ठ 7 पर

साप्ताहिक स्वध्याय

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के अमर जीवन दर्शन का साप्ताहिक स्वाध्याय

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती पर उनके जीवन दर्शन का स्वाध्याय सभी आर्यजनों के लिए अत्यंत आवश्यक है। ऐसा सभा की अंतरंग बैठक में अधिकारियों ने निर्णय लिया है। इसके लिए आर्य संदेश के साप्ताहिक अंक में हम एक नियमित कॉलम के रूप में महर्षि दयानंद की जीवनी को क्रमश: प्रकाशित करने का पूरा प्रयास कर रहे हैं। सबसे अनोखे, अनूठे महर्षि का जीवन चरित्र यूं तो हमारे अनेकानेक महापुरुषों ने अपनी लेखनी से अद्भुत और अनुपम लिखा है, जिनमें पंडित लेखराम, स्वामी सत्यानंद, डॉ. रघुवंश, देवेंद्र मुखोपाध्याय, रामविलास शारदा, गोपाल राव, भवानी लाल भारतीय, पंडित लक्ष्मण आर्य उपदेशक और अन्य अनेक लेखक महापुरुषों के प्रति कृतज्ञता और आभार व्यक्त करते हुए यहां पर प्रस्तुत है- इंद्र विद्यावाचस्पति द्वारा लिखित महर्षि दयानंद का जीवन चरित्र, जिसको हम क्रमश: प्रकाशित कर रहे हैं। सभी पाठकों से अनुरोध है कि अपने स्वाध्याय के क्रम में महर्षि की जीवनी को शामिल करें और दूसरों को प्रेरित करें।

क्रमशः गतांक से आगे

चिन्तित मूलशंकर जी ने शंका निवृत्त करने के लिए पिता को जगाया। पिता के पास प्रतिभाशाली पुत्र के गहरे प्रश्नों का उत्तर कहां था। वह जिज्ञासु की जिज्ञासा को तृप्त न कर सके। मूलशंकर जी निरुत्साहित होकर मन्दिर से घर चले आये और प्रेममयी मां से अपनी भूख की शिकायत की। मैं तो पहले ही कहती थी कि तू भूखा न रह सकेगा इत्यादि बहुत-सी बातें माता ने कही होंगी। माता ने पुत्र को पेट भरकर खिला दिया और बिस्तर पर सुला दिया। यह घटना मूलशंकर के जीवन में मौलिक परिवर्तन उत्पन्न करने का कारण बनी और मूर्ति पूजा पर से उनकी श्रद्धा उठ गई। कई लोग आशंका किया करते हैं कि इतनी छोटी-सी बात और वह भी इतनी छोटी-सी अवस्था में इतना बड़ा परिणाम कैसे उत्पन्न कर सकती थी? अनुभव से देखा गया है कि ऐसी छोटी बातें छोटी अवस्था में ही इतना प्रभाव उत्पन्न करती हैं। उस समय बालक की बुद्धि बड़ी नर्म होती है, उस पर छोटा-सा भी आघात प्रतिक्रिया को उत्पन्न कर देता है। बड़ी अवस्था में बुद्धि कठोर हो जाती है, प्रतिभा अनुभवों के बोझ से दब जाती है और बहुत-सी घटनाएं जो बालक के हृदय में नई होने के कारण उत्तेजना उत्पन्न करती हैं, प्रौढ़ के हृदय में बार-बार देखी हुई होने के कारण कुछ भी प्रभाव उत्पन्न नहीं करतीं। इस घटना के बाद मूर्तिपूजा से मूलशंकर जी की श्रद्धा उठ गई। उन्होंने चाचा और माता की सिफारिश से पिता से पूजा-पाठ के कार्यों से छुटटी ले ली और पठन-पाठन में जी लगा दिया। इस समय दो ऐसी घटनाएं हुई जिन्होंने मूलशंकर जी के स्वच्छ दर्पण के समान हृदय पर स्थायी प्रतिबिम्ब छोड़ दिया। उन घटनाओं का वर्णन चरित-नायक की अपनी भाषा में ही सुनाना उत्तम होगा। महर्षि ने आत्मचरित में उनका इस प्रकार वर्णन किया है- ''मेरी 16 बरस की अवस्था के पीछे मेरी 14 बरस की बहिन थी। उसको हैजा हुआ, जिसका वृत्तान्त यों है एक रात जबकि हम एक मित्र के घर नाच देखने गए हुए थे, तब अचानक नौकर ने आकर खबर दी कि उसे हैजा हो गया है। हम सब तत्काल वहां से आए। वैद्य बुलाए गए, औषधि की, मगर कुछ फायदा न हुआ। चार घण्टों में उसका शरीर छूट गया। मैं उसके बिछौने के पास दीवार से आसरा लेकर खड़ा था। इससे मेरे दिल को बड़ा कष्ट हुआ। मुझे बहुत डर लगा और मारे डर के सोचने लगा कि क्या सारे मनुष्य इसी प्रकार मरेंगे और ऐसे ही मैं भी मर जाऊंगा? सोच-विचार में पड़ गया कि जितने जीव संसार में हैं उनमें से एक भी न बचेगा? इससे कुछ ऐसा उपाय करना चाहिए कि जिससे जन्म-मरणरूपी दु:ख से यह जीव छूटे और मुक्त हो, अर्थात् उस समय मेरे चित्त में वैराग्य की जड़ लग गई।''

सब लोग रोने लगे, परन्तु वैराग्य की लहर में बहते हुए मूलशंकर की आंख से आंसू न निकले। बालक मूलशंकर रोने की चिन्ता में नहीं था, वह सदा के लिए रोने से बचने का उपाय ढूंढ रहा था। इस घटना से मूलशंकर के हृदय में वैराग्य का अंकुर उत्पन्न हो गया।

-क्रमशः अगले अंक में...

स्वास्थ्य संदेश

एक्युप्रेशर से कान के रोगों का उपचार

क्रमशः गतांक से आगे

कभी-कभी गर्दन का दर्द (cervical spondylosis), मधुमेह, तंबाकू शराब व दूसरे अनेक नशों का सेवन तथा यौन रोग सिफलिस (syphilisan infections venereal disease) भी कानों के ऐसे रोगों का कारण बन जाते हैं। अगर इन रोगों के लक्षण हों तो इनसे संबंधित प्रतिबिम्ब प्वाइंट्स पर भी प्रेशर देना चाहिए तथा नशे का त्याग करना चाहिए। इन रोगों के मनोवैज्ञानिक कारण भी होते हैं जैसे किसी प्रकार का डर, चिंता, अनबन तथा अनेक तरह की परेशानिया इत्यादि। अगर ऐसे कारण हों तो उनका भी निवारण करना चाहिए।

सामान्य रूप से कान में रहने वाला मोम कर्णपटल पर जमा होकर और सख्त बनकर भी बहरेपन का कारण बन सकता है। अडीनोयड (adenoids) तथा टान्सिल के काफी बढ़ जाने से गले और कान की नलिका (eustachian tube) बन्द हो जाती है जिससे मध्य कान में वायु नहीं पहुंच पाती और बहरापन हो जाता है। कानों और दांतों का गहरा संबंध है। अगर अकल दाढ़ टेढ़ी निकल आए या टेढ़ी निकल कर दूसरे दांत के साथ टकरा जाए और उसको दांतों के डॉक्टर से न निकलवाया जाए तो भी बहरापन हो सकता है। वृद्धावस्था में कई लोगों को

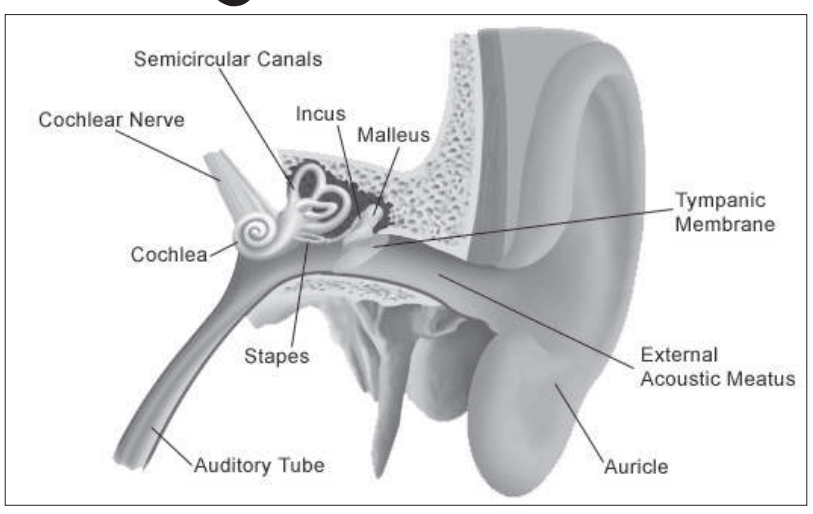

ऊंचा सुनने लगता है जो बहरापन की पहली अवस्था है। कान के अन्य रोगों में कान या कान के निकट वाले भाग में काफी दर्द रहता है जिसके कारण उस स्थान की त्वचा लाल हो जाती है और प्राय: सिर दर्द होने लगता है। कान के विभिन्न रोगों में कान के भीतर फोड़े या फुंसियां हो जाती हैं। इससे तीव्र दर्द होने लगता है। दांतों के किसी भी रोग, सर्दी लगने, काफी देर पानी में रहने तथा कान में पानी जाने, बहुत ठंडी अथवा भीगी जगह पर सोने के कारण भी कानों का दर्द हो जाता है। अधिक दिनों तक लगातार बुखार रहने तथा पुराने जुकाम-नजले के कारण भी कान के कई रोग होने लगते हैं। कानों के रोगों को योग, आसन, प्राणायाम एवं मुद्रा से ठीक किया जा सकता है।

एक्युप्रेशर से कान के रोगों का उपचार

जन्म से बहरेपन को ठीक करना कठिन कार्य है। विश्वास और धैर्य के साथ एक्युप्रेशर से बहरापन दूर किया जा सकता है। इसमें काफी समय अर्थात कई महीनों का समय लग सकता है। बच्चे की श्रवणेन्द्रियां काम नहीं करती तभी से यह इलाज शुरू कर देना चाहिए। जिन लोगों को किसी कारणवश सुनना बन्द हो जाता है। उनमें से काफी लोगों की सुनने की शक्ति पुन: लौट सकती है।

कानों से जुड़े प्रमुख प्रेशर पांइट्स

कानों से संबंधित प्रमुख प्रतिबिम्ब प्वाइंट दोनों पैरों तथा दोनों हाथों में चौथी एवं पांचवीं अंगुलियों के उस भाग में हैं जहां अंगुलियां तलवों तथा हथेलियों से क्रमश: मिलती हैं जैसा की चित्र सं. 62 तथा चित्र सं. 64 में बताया गया है। इन प्वाइंट्स पर प्रेशर देने का ढंग चित्र सं. 63 तथा चित्र सं. 65 से स्पष्ट हो जाता है। प्रेशर रबड़ या लकड़ी के किसी उपकरण से भी दिया जा सकता है। रोग की अवस्था में तथा कानों को स्वस्थ रखने के लिए इन प्वाइंट्स पर नियमित रूप से प्रेशर देना चाहिए। प्रेशर देने के बारे में विस्तृत जानकारी अध्याय 1 में दी गई है।

कानों से जुड़े अन्य प्रेशर प्वाइट

कानों के अनेक रोग दूर करने के लिए ऊपर दर्शाए गए प्रेशर प्वांइट के कई सहायक प्वाइंट भी हैं जोकि काफी महत्वपूर्ण हैं। प्रमुख प्वाइंट्स के साथ अगर कुछ या सब सहायक प्वाइंट्स पर भी प्रेशर दिया जाए तो कई रोग शीघ्र दूर होते हैं। खोपड़ी तथा गर्दन में जितने भाग हैं उन सब का पोषण गर्दन के भाग से होता है। अत: कानों के समस्त रोग दूर करने के लिए यह आवश्यक है कि गर्दन से संबंधित प्रतिबिम्ब प्वाइंट्स पर नियमित रूप से प्रेशर दिया जाए। ये प्वाइंट पैरों तथा हाथों के अंगूठों के बाहरी तथा भीतरी भागों में होते हैं जैसाकि चित्र सं. 66 में तथा उन पर प्रेशर देने का ढंग चित्र सं. 67, 68 तथा 69 में दिखाया गया है।

वैदिक धर्म और संस्कृति को अपनाने से रुकेगा धर्म परिवर्तन –विनय आर्य

सिडनी, में विनय आर्य जी का 'द अनम्यूट' चैनल द्वारा विशेष साक्षात्कार

यहां प्रस्तुत है इंटरव्यू के कुछ विशेष अंश

आस्ट्रेलिया में वैदिक धर्म के विस्तार हेतु आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों के दौरान वहां के 'द अनम्यूट' चैनल की ओर से श्री सन्नी सिंह ने सभा महामंत्री श्री विनय आर्य जी का इंटरव्यू लिया। इस महत्वपूर्ण साक्षात्कार में आपने कई प्रश्न परिवार-समाज और धर्म परिवर्तन को लेकर रखे, जिनका उत्तर विनय जी ने बड़ी सरलता से दिया...

प्रश्न आपको सिडनी आकर कैसा लगा?

उत्तर मुझे सिडनी आकर बहुत अच्छा लगा और यह देखकर ज्यादा प्रसन्नता हुई कि सिडनी में एक नया भारत निर्मित हो रहा है। भारत की वैदिक संस्कृति को सब लोग जान रहे और मान भी रहे हैं। अब भारत और आस्ट्रेलिया के बीच ऐसी दूरी नहीं है जैसी पहले होती थी। आस्ट्रेलिया में रहने वाले भारतीय सनातन वैदिक धर्म की गहराई को समझते हैं और उसमें जीते भी हैं। यहां पर यह सब देखकर मुझे बहुत खुशी हुई।

प्रश्न हमें प्यार से जीवन जीने के लिए किस तरह के संतुलन की आवश्चकता है?

उत्तर परिवार में प्रेम का वातावरण बनाए रखने के लिए हमें सबसे पहले तो अपने बच्चों के साथ समय बिताना चाहिए। धन-दौलत कमाने की भाग दौड़ में हमें यह भी सोचना चाहिए कि हमारी असली संपत्ति तो हमारे अपने बच्चे हैं। इसलिए हमें अपने और उनके बीच गैप नहीं होने देना चाहिए। दूसरा हमें आपस में छोटी छोटी बातों को लेकर मनमुटाव नहीं करना चाहिए। अगर कोई बात हो भी जाए तो आपस में बातें करनी बंद नहीं करनी चाहिए, बच्चों को माध्यम बनाकर एक दूसरे को मैसेज नहीं भेजना चाहिए, इससे बच्चों की मानसिकता पर प्रभाव पड़ता है और घर का वातावरण भी खराब होता है। मानसिक संतुलन के लिए घर में प्रेम प्रसन्नता का वातावरण होना ही चाहिए। इसके लिए आपस में प्रेम सौहार्द बनाकर चलें तो सबकुछ अच्छा रहता है। और अगर कोई छोटी मोटी बात हो भी जाए तो उसे बड़ा इस्यु न बनने दें, नयी सुबह के साथ ही उसे हमेशा के लिए भुलाकर आगे बढ़ें।

इसके साथ-साथ सभी माता-पिताओं को यह भी ध्यान रखना जरूरी है कि आप यहां मल्टीकल्चर सोसायटी में रहते हैं, इसलिए आपके बच्चों को यह जानकारी अवश्य होनी चाहिए कि आप भारत के रहने वाले हैं, भारत की वैदिक, धर्म, संस्कृति और संस्कारों की विचारधारा संपूर्ण विश्व में सनातन है। इस विषय में बच्चों को यह भी बताएं कि वेद ईश्वर की वाणी है और इसके ज्ञान विज्ञान से ही सारा संसार उन्नति के रास्ते पर आगे बढ़ रहा है। बच्चों को इस तरह की जानकारी होगी तो वे कोई प्रश्न सामने आने पर उसका उत्तर भी देंगे और इधर-उधर भटकने से भी बचे रहेंगे। घरों में प्रेम प्रसन्नता बनी रहेगी।

प्रश्न आज सनातन में ज्यादा धर्म परिवर्तन हो रहा है, क्या आप ऐसा मानते हैं?

उत्तर धर्म परिवर्तन के पीछे सबसे बड़ा कारण मैं अज्ञानता को मानता हूं। जो व्यक्ति अपनी सनातन संस्कृति के महत्व और विशेषताओं को नहीं जानता और मानता तो उसका दूसरों के प्रभाव में आकर बिना सोचे-समझे उनके पीछे चले जाना इसका सबसे बड़ा कारण है। वेद ईश्वर की वाणी है, वेदों का ज्ञान विज्ञान ही मानव जीवन और संपूर्ण संसार की उन्नति प्रगति और सफलता का आधार है। वैदिक संस्कृति सबसे श्रेष्ठ संस्कृति है और सबसे प्राचीन संस्कृति है, वेदों की देन ही है कि आज मनुष्य चारों ओर निरंतर आगे बढ़ रहा है। सबसे बड़ी बात यह है कि आज के समय में हमने इसको गहराई से समझना छोड़ दिया है और हम लोग पूजा-पाठ तक ही सीमित होते जा रहे हैं। संपूर्ण विश्व को संस्कृति, सभ्यता, संस्कार, भाषा, विमान और जो कुछ भी आधुनिक परिवेश में हम देख रहे हैं, वह सब वेदों की ही देन है। सिर उठाकर जीने का जो ज्ञान मिला है वह हमें वेदों से ही तो मिला है। लेकिन जब हम अपने बच्चों को यह सब नहीं सिखाएंगे, नहीं बताएंगे तो उन्हें ऐसा लगता है की दूसरे लोग जो कह रहे हैं, बता रहे हैं वह लॉजिकल है, प्रमाणिक है और हम जो कर रहे हैं वहीं अनलॉजिकल है। वह केवल परंपरा है। क्योंकि उन्हें उस बारे में जानकारी नहीं होती। हवन की अगर बात की जाए तो आधुनिक युवा पीढ़ी को लगता है कि यह वेस्टेज है। घी, सामग्री का प्रयोग करके हवन करना समय और धन की हानि है, लेकिन जब हम उन्हें बताते हैं कि पर्यावरण की शुद्धि के लिए हवन एक साइंस है, इसका एक विज्ञान है, उससे पर्यावरण शुद्धि होती है और उसका हमने जो रिसर्च किया है, जब हम उनको दिखाते हैं और बताते हैं तो वे फिर उसको जानने की कोशिश भी करते हैं। कहने का मतलब है कि धर्म परिवर्तन पर अगर ब्रेक लगेगा तो उसका आधार यही होगा कि हम अपने परिवार को, अपने समाज को, बच्चों को अपनी संस्कृति के बारे में, सनातन संस्कृति के मूल आधार वेदों के बारे में, ऋषि मुनियों के बारे में, अपने धर्म के बारे में उनसे चर्चा करें। उनको बताएं संसार में सबसे श्रेष्ठ धर्म और सबसे श्रेष्ठ संस्कृति हमारी अपनी है, तो फिर वे दूसरों के कुचक्र में नहीं फंसेंगे।

प्रश्न आज हो रहे धर्म परिवर्तन में क्या माता-पिता और गुरु भी जिम्मेदार हैं?

उत्तर जी हां, माता-पिता और गुरुजनों को बिल्कुल जिम्मेदार माना जा सकता है। क्योंकि गुरुजनों की जिम्मेदारी केवल यह नहीं होती कि वे पूजा-पाठ ही सिखाते रहें या कथा ही सुनाते रहें। उन्हें इससे भी आगे आकर अपनी संस्कृति, सभ्यता और संस्कारों का ज्ञान भी युवा पीढ़ी को देना चाहिए। वेदादि शास्त्रों के विषय में युवाओं को बताना चाहिए, जिससे उन्हें अपने कल्चर का पूरी तरह से ज्ञान हो सके। इसके साथ ही माता-पिता भी अपने बच्चों को प्रेरित नहीं करते, युवाओं के मन में उठने वाले प्रश्नों का समाधान होना बहुत जरूरी है। अगर उनके भीतर प्रश्नों का उदय हो रहा है और उनको अपने यहां पर सही जानकारी नहीं मिल पा रही है तो फिर वे दूसरी जगह पर जाकर अपनी बात रखेंगे और दूसरे लोग पूरे लॉजिक के साथ उन्हें अपनी बात समझाने की कोशिश करेंगे। अब इन्हें तो अपनी संस्कृति और परम्पराओं के विषय में कुछ पता नहीं था, और पता भी था तो वह आधा अधूरा और दूसरे लोग पहले से तैयार थे, तो अपनी संस्कृति की जानकारियों के अभाव में दूसरों के सामने हमारी युवा पीढ़ी निरुत्तर हो जाती है और फिर उनके ऊपर दूसरों का प्रभाव असर करने लगता है। इसलिए माता-पिता को भी अपने बच्चों से समय-समय पर चर्चा करनी चाहिए और गुरु-ज्ञानीए संतों को भी केवल कथा ही नहीं बल्कि अध्यात्म के साथ ही वेद के विज्ञान का प्रचार-प्रसार भी करना चाहिए, उन्हें समझाना चाहिए। तो यह एक बहुत अच्छा तरीका है कि हम अपने बच्चों से आत्मीयता पैदा करें और उन्हें अपने धर्म, संस्कृति और संस्कारों के बारे में विस्तार से बताएं जिससे वे इधर-उधर भटकने से बचे रहेंगे।

प्रश्न धर्म परिवर्तन के विषय को लेकर क्या कभी आपके सामने भी युवा पीढ़ी की ऐसी बातें आई हैं, जिनका आपने समाधान किया हो?

उत्तर जी हां, लगातार ऐसी बातें आती ही रहती हैं और उनका हमने पूरे साइंटिफिक तरीके से समाधान किया है। कई बार 16, 17, 18 वर्ष के बच्चे जैसे यज्ञ के विषय में ही कहते हैं कि आप जो हवन कर रहे हैं, उसमें जो सामग्री डाली जा रही है, जो भी कुछ डाला जा रहा है और जो भी आप अग्नि में चढ़ा रहे हैं, तो वह सब तो नष्ट हो रहा है, इससे क्या लाभ है? तब हमने उन्हें बताया कि यज्ञ पूरी तरह से एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है और यह केवल कहा ही नहीं बच्चों को बताया ही नहीं, हमने उनको करके दिखाया और रिसर्च का फोल्डर भी दिखाया, जो हमने यज्ञ के ऊपर रिसर्च किया है, उसके प्रमाण भी दिखाए। उन्हें पढ़ाया, समझाया तो वे हवन को बहुत अच्छा मानने लगे और सबने यही कहा की हवन एक बहुत ही वैज्ञानिक और वैधानिक तरीका है। इसी तरह वेद के ज्ञान विज्ञान की महिमा को भी उन्होंने माना, तो इस तरह युवाओं को सुदिशा देने का कार्य बहुत जरूरी है। जिसे हम लगातार कर रहे हैं।

प्रश्न आज सब लोग अपने धर्म को बड़ा बता रहे हैं, आप हमें यह बताएं कि धर्म हमें जोड़ता है या बांटता है?

उत्तर सारी दुनिया में धर्म तो एक ही है। बड़ा या छोटा धर्म को बताना या मानना बिल्कुल निराधार बात है। और धर्म का तो अपने आपमें व्यापक स्वरूप है, जो हमें जीवन जीने की कला सिखाता है। लेकिन धर्म का एक अर्थ कर्तव्य भी है, जैसे माता-पिता का धर्म है अपनी संतान को पाल पोसकर बड़ा करना, उन्हें पढ़ाना लिखाना, लायक बनाना, यह सभी मत जैसे मुसलमान, ईसाई, पारसी जो भी जितने भी मत हैं, सभी में माता-पिताओं का एक समान कर्तव्य है, उसके साथ ही अध्यापक का भी एक यही धर्म है कि बच्चों को शिक्षित करना। तो इस तरह धर्म की इस कर्तव्य पूर्ण व्याख्या को आप कहीं तक भी घटाते जाएं सबका एक ही उत्तर रहेगा, कर्तव्य परायणता। लेकिन कुछ मतों द्वारा धर्म की व्याख्या गलत तरीके से करने के कारण विकृति आ जाती है। धर्म का मतलब सीधा और सरल तरीके से आप समझें कि यह सबकी अपनी-अपनी ड्यूटी है, कर्तव्य है। इसलिए धर्म हमें बांटता नहीं, मत संप्रदाय ही बांटते हैं। किसी मत ने कहा ऐसा करें, दूसरे ने कहा वैसा करें तो यही कारण है कि लोग अलग-अलग टुकडो में बंटते गये और अभी भी बंट रहे हैं। ऑस्ट्रेलिया में जैसे एक कानून है कि सड़क पर लेफ्ट साइड में सबको चलना है, अब दूसरा आकर कहे कि आपको राइट चलना है और तीसरा कहे कि आपको बीच में चलना है। तो सब के सब बंट जाएंगे, कोई इस साइड में चलेगा, कोई उस साइड में चलेगा और कोई बीच में चलेगा।

- शेष पृष्ठ 5 पर

मतलब कहीं पर भी देखें जो कल्याण कारी नियम है, जो व्यवस्था है, जो अनुशासन है वही धर्म है। जबकि जो अलग-अलग रीति रिवाज हैं, वे अलग-अलग मतों के कारण हैं। उनके विषय में कुछ न कहते हुए आपके प्रश्न का उत्तर यही है कि धर्म तो हमें जोड़ता है, बांटता नहीं है।

वेद में कहा गया है कि एक मनुष्य दूसरे मनुष्य की रक्षा करे, अगर आप देखें कि मनुष्य सांप से, हाथी से, शेर या जितने हिंसक जानवर हैं उनसे बचने के लिए घर में ताले थोड़ा ही लगाते हैं। मनुष्य से, यानी मनुष्य के रूप में जो लोग चोर हैं उनसे बचने के लिए घरों में ताले लगाते हैं। उनसे ही डरता है मनुष्य। इसलिए वेद का संदेश है कि सब मनुष्य एक दूसरे की रक्षा करें। वेद धर्म सबके लिए कॉमन है। सबके लिए समान है, सबके कल्याण की बात करने वाला केवल वैदिक धर्म है। इसलिए वेद यानी धर्म सबको जोड़ता है और दूसरी चीजें हैं जो मतों के रूप में हमें बांटती हैं। धर्म के वास्तविक स्वरूप को समझना चाहिए और कभी भी मानवता का शत्रु नहीं बनना चाहिए तो फिर धर्म केवल और केवल जोड़ने का ही काम करेगा।

प्रश्न आजकल अनेक लोग चमत्कार की बात करते हैं, तो क्या सच में चमत्कार होते हैं?

उत्तर ईश्वर की न्याय व्यवस्था के अनुसार जो होता है, वही चमत्कार होता है। इसके सिवाय दुनिया में कोई चमत्कार नहीं होता। अगर कहीं पर किसी को कोई चमत्कार नजर आता है तो यह उसकी आंखों का बहुत बड़ा धोखा है, यह एक हाथ की सफाई है, इसे एक जादू भी कह सकते हैं। क्योंकि चमत्कार नाम की कोई चीज दुनिया में किसी के करने से कभी नहीं होती।

मान लीजिए कि अगर किसी को कोई बीमारी है, जैसे बुखार ही मान लीजिए तो बुखार की दवाई ली, क्रोसिन की टेबलेट ली और बुखार ठीक हो गया, तो यह भी अपने आप में चमत्कार है। लेकिन यहां पर एक बात सोचने की है कि क्रोसिन की दवाई जो भी लेगा, उसका तो बुखार उतरना हीं उतरना है। तो इसमें चमत्कार की क्या बात है? क्योंकि वह दवाई का अपना असर है और वह सबके ऊपर समान रूप से काम करेगी। इसी तरह ईश्वर की व्यवस्था में उसके नियम और कानून में कोई अंतर नहीं है, वह सबके लिए समान है, सबके ऊपर एक जैसी कृपा करता है और सबको अपने कर्मों का फल भी बराबर देता है। इसलिए मैं कहना चाहूंगा कि बिना लाजिक की बातों को नहीं मानना चाहिए। अपनी बुद्धि और विवेक का प्रयोग करना चाहिए। अगर चमत्कार होते तो जो जादूगर चमत्कार करते हैं फिर वे इस तरह से मारे-मारे क्यों फिरते। इसलिए अपने विज्ञान को मानिए, अपनी बुद्धि से विचार करें और ईश्वर की व्यवस्था पर विश्वास करके अपने कर्म पथ पर आगे बढ़ते जाएं उसी में कल्याण है।

प्रश्न आज के समय में युवाओं को हम धर्म का मार्ग कैसे दिखाएं?

उत्तर प्रत्येक मनुष्य को सही और गलत का निर्णय करने के लिए परमात्मा ने विशेष रूप से बुद्धि प्रदान की है। इसलिए यह सब जानते हैं कि सत्य क्या है और असत्य क्या है। लेकिन लोभ और लालच में पड़कर गुरुओं के चक्कर में आ जाते हैं और सोचते हैं कि किसी के चमत्कार से हम बिना कुछ करे यहां से वहां तक पहुंच जाएंगे, जो कि बिल्कुल निराधार बात है। जो व्यक्ति जैसा कर्म करेगा उसका परिणाम भी उसे वैसा ही प्राप्त होगा। लेकिन आजकल शॉर्टकट अपनाकर लोग आगे बढ़ना चाहते हैं और जिनको हम चमत्कारी कहते हैं, वे लोग समाज की इस कमजोरी को जानते हैं। इसलिए वे कहते हैं कि आओ, हम तुम्हें सब कुछ तुम्हारे अनुकूल प्रदान कर देंगे। अब धन और समय सब बर्बाद करके फिर बाद में लोग पछताते हैं। वे लोग सोने को 4 गुना, पैसे को 4 गुना करने की बात करते हैं और भोले-भाले लोग उनके चक्कर में आकर फंस जाते हैं, वे यह नहीं समझते कि अगर ये तथाकथित चमत्कारी ऐसा कर पाते तो फिर उन्हें इधर-उधर भागने की क्या जरूरत थी? इसलिए गलत और सही को समझना धर्म और अधर्म को समझना यह बहुत जरूरी है।

धर्म के नाम पर ऐसे लोग जो अपनी दुकान चला रहे हैं और इस तरह से जब युवा लोगों का विश्वास टूटता है उन्हें लगता है कि हमारे साथ धोखा हुआ है तो फिर वे भी धर्म से दूर भागने लगते हैं। इसलिए वेद का जो संदेश है, जो उपदेश है, वहां पर कर्म सिद्धांत की शिक्षा दी जाती है, उसे पढ़कर, सुनकर, समझकर व्यक्ति फिर सही रास्ते पर चलता है। सुख शांति और आनंद पूर्ण जीवन जीना सीख जाता है। क्योंकि सही और गलत के चक्कर से बचकर व्यक्ति फिर चमत्कारी के चंगुल में नहीं फंसता बल्कि अपने कर्म की कुशलता से स्वयं आश्चर्यजनक कीर्तिमान स्थापित करने लगता है। तो युवाओं को किसी के बहकावे में ना आकर अपनी बुद्धि से अपने मन से और अपने विवेक से कार्य करना चाहिए। वैदिक धर्म को अपनाकर ही हम अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त कर सकते हैं। यह हमें अवश्य सोचना चाहिए।

प्रश्न आज के समय में इंसानियत गिरती जा रही है और स्वार्थ बढ़ता जा रहा है, ऐसे समय में आप इंसानियत की व्याख्या कैसे करोगे?

उत्तर इसके लिए वेद में कहा है 'मनुर्भव:' अर्थात मनुष्य को मनुष्य बनना चाहिए। मानवता की इससे सुंदर व्याख्या आपको कहीं पर भी नहीं मिलेगी। प्रत्येक मनुष्य दूसरे की सहायता करे और उस स्थिति तक सहायता करें जहां तक उसकी खुद की हानि न हो, वह मनुष्य है। लेकिन इससे भी आगे एक स्थिति ऐसी होती है कि जो मनुष्य अपनी हानि करके भी दूसरे का लाभ करता है, तो वह मनुष्य नहीं बल्कि देवता कहलाता है। जैसे हमारे माता-पिता हैं, वे अपनी चिंता ना करके अपने बच्चों का भला करते हैं। मां खुद गीले में सो करके भी बच्चे को सूखे में सुलाती है, तो इसलिए मां भी देवता है, पिता अपनी जरूरतों को कम करके बच्चे की जरूरतों को पूरा करता है, वह भी देवता है। उसी तरह से अगर कोई भी स्थान हो, रिश्ता हो, पद हो या कोई सामाजिक कार्य हो, उसमें अगर व्यक्ति अपना नुकसान करके भी दूसरे को फायदा पहुंचाता है, तो उसे हम देवता कहते हैं।

इसलिए आजकल के बच्चों को भी मनुष्य बनना चाहिए अर्थात अपने माता-पिता के लिए, अपने मित्रों के लिए या पूरे समाज के लिए अगर कोई अपना साथी पढ़ाई में पीछे है, तो उसको उस रूप में सहायता देनी चाहिए, अगर कोई साधन सुविधाओं में पीछे है तो उसका वैसे ही सहयोग करना चाहिए। क्योंकि जितने भी हमारे मंदिर हैं, गुरुद्वारे हैं या फिर जितने भी स्थान हैं, वहां सब जगह मानवता, इंसानियत ही तो सिखाई जाती है, वहां पर जो चित्र लगे हैं, मूर्तियां चाहे राम जी की हो, कृष्ण की हो या फिर गुरु गोविंद सिंह की हो, गुरु नानक देव जी की हो तो सारे महापुरुषों की जो मूर्तियां हैं उन्होंने संपूर्ण मानव जाति को जो शिक्षा दी है, उन्होंने यही तो सिखाया है कि सहयोग करो, सेवा करो, साधना करो, समर्पण करो, देश के लिए, धर्म के लिए, समाज के लिए, मानवता के लिए जीवन जियो। इस तरह से इंसानियत की रक्षा होगी और मनुष्य समाज सुखी और आनंद पूर्ण जीवन यापन करेगा।

प्रश्न वेद 5000 साल पुराने हैं लेकिन आज के बाबा लोग उनमें परिवर्तन कर रहे हैं और युवाओं को आकर्षित कर रहे हैं। अब युवा कौन सी चीज को मानें, क्या करें?

उत्तर वेद उतने ही पुराने हैं जितना कि मानव जीवन। एक अरब 96 करोड़ से ज्यादा वर्ष सृष्टि की उत्पत्ति को हो गये हैं और इतना ही समय वेदों को हो गया है। वेदों में कभी कोई परिवर्तन नहीं आया, वेद जैसे तब थे, वैसे ही अब हैं और वैसे ही आगे भी रहेंगे। वेद ईश्वर की अमृतवाणी है इसमें एक शब्द की मिलावट भी नहीं हुई। वेद सत्य के प्रकाश करने वाले हैं, जैसे ईश्वर सत्य है, वैसे ही उसकी अमृत वाणी वेद भी सत्य हैं। मनुष्य द्वारा रचित ग्रंथों में तो मिलावट हो सकती है लेकिन वेदों में नहीं। जैसे दो और दो चार होते हैं, होते थे और होते रहेंगे। 10, 20, 50 साल के बाद ऐसा नहीं होगा कि दो और दो जोड़ने पर वे सवा चार हो जाएं, तब भी दो और दो चार ही होंगे। वैसे ही वेद भी सदा जैसे थे, वैसे ही हैं और वैसे ही रहेंगे। सत्य में कोई परिवर्तन नहीं होता। इसलिए वेद को 5000 साल या 10000 साल पुराना कहना ठीक नहीं है।

प्रश्न जैसा आप कह रहे हैं कि वेद में कभी परिवर्तन नहीं हुआ और न होगा, तो क्या बाबाओं ने वेद में परिवर्तन किया है?

उत्तर यह तो आप समझ ही गए हैं कि वेद अपरिवर्तनशील हैं। वेदों को कोई बाबा भी परिवर्तित नहीं कर सकता। हां इतना जरूर है कि कुछ लोगों ने समय-समय पर वेदों की व्याख्या अपने ढंग से करने की नाकाम कोशिश की है। उन लोगों ने वेदों के पढ़ने-पढ़ाने और सुनने-सुनाने की परंपरा भी बंद करवा दी थी। उन लोगों का कहना था कि महिलाएं भी वेद नहीं पढ़ सकती और भी कई वर्गों को कहा कि आप भी वेद नहीं पढ़ सकते, हम जो कहेंगे, वही मानो, वही सत्य है, हम वेद पढ़कर तुम्हें समझाएंगे और जो हम समझाएं, बताएं, वही करते जाओ, इस तरह से उन्होंने वेदों की अपने मनमाने ढंग से व्याख्या की, जिसके परिणामस्वरूप वेदों की व्याख्या के रूप में जो आप कह रहे हैं वह परिवर्तन की बात सामने आई।

जब लोगों ने संस्कृत और व्याकरण पढ़ना बंद कर दिया और संस्कृत नहीं आएगी तो फिर वेद कैसे पढेंगे। और इस तरह से हम वेद ज्ञान से दूर होते गए। लेकिन यहां पर यह अवश्य समझें कि संसार में ऐसी कोई समस्या नहीं है जिसका समाधान वेद में ना हो। इसलिए वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना प्रत्येक मनुष्य का परम धर्म है। वर्तमान में जो समस्याएं विश्व स्तर पर दिखाई दे रही हैं, उनमें चाहे पर्यावरण की समस्या हो या ग्लोबल वार्मिंग की समस्या हो, अधिक वर्षा, अधिक गर्मी, सर्दी या अधिक बीमारियां, महामारी या फिर उन्नति प्रगति का रास्ता हो, सब कुछ ज्ञान वेद में समाया हुआ है। इसलिए वेद के रास्ते पर चलने के लिए प्रत्येक मनुष्य को प्रयास करते रहना चाहिए।

महात्मा बुद्ध जब युवा थे तो उन्होंने देखा कि कुछ लोग भेड़-बकरियों को लेकर जा रहे हैं। उन्होंने पूछा इन्हें तुम कहां लेकर जा रहे हो, उन लोगों ने कहा कि इनको हवन में बलि देने के लिए जा रहे हैं। बुद्ध ने पूछा ऐसा कहां पर लिखा है? तो लोगों ने कहा कि वेद में लिखा है। इस पर बुद्ध ने कहा था कि अगर वेद में ऐसा कहा गया है तो मैं वेदों को ही नहीं मानता। इस तरह से लोग वेदों से दूर होते गए और जो हमारा ज्ञान-विज्ञान था, उससे भी कटते चले गए। महर्षि दयानंद सरस्वती ने आकर बताया कि संपूर्ण मानव जाति को उन्नति प्रगति और सफलता अगर किसी माध्यम से प्राप्त हो सकती है तो उसका परम आधार केवल और केवल वेद ही हैं। वेद का जो सही अर्थ है वह महर्षि दयानंद ने संसार को बताया और कहा कि अगर सुख, शांति, समृद्धि और आनंद चाहते हो तो वेदों की ओर लौटो। जितना भी मैथ, साइंस और भाषाएं आदि जो कुछ भी आप संसार में देख रहे हैं, सब वेदों पर आधारित है और इसलिए भारत विश्व गुरु था, क्योंकि यहां पर वेदों का अमृत ज्ञान था।

-संपादक

Vedic Cosmogony in Nutshell

Continuing the last issue

These Aryans or Indo-Aryans have, in fact, been custodians of all knowledge and preservers of human culture and civilisation. The Indians in particular have been responsible for preserving the Vedas, the Divine gift to humanity at large providing all relevant informations on what is essentially knowable and chartering the human conduct and behaviour in keeping with the Divine plan of things.

After creating mankind, God, in His natural dispensation of things, gives them the Vedic knowledge through the process of inspiration in the innerselves of the most advanced of them. The Veda, the earliest literature in the library of mankind, speaks of one Vedic message, consisting of four parts or the four Vedas—the Rigved, the Yajurved, the Samaved and the Atharvaved—and states definitely that the Veda is of the Divine origin. The Brahman literature of India states that the four Vedas, as enumerated above, were revealed to the four sages Agni, Vayu, Aditya and Angira.

Man is not instictive but rational. This, in fact, is the Divinity made point of distinction between man and other creatures. The European theorists until recently held that mankind made human speeches by consensus of opinion after the imitation of various sounds in nature. Prof. Maxmuller sucessfully washed out such way of thinking in his Science of Language and. the allied writings. As a matter ot fact, some human children, kept away from the human society and brought up in seclusion in France and India, learnt nothing of the human speech and other human activities.

It's now practically admitted on all hands that speech and knowledge are the natural or Divine gift to mankind. Every sane person today admits that, unless a human child is instructed, it cannot learn anything by itself. Animals, birds, etc., are naturally instinctive and learn things to keep them alive instinctively.

Rigved, 10.62.5-6, state : 'Those (original) seers are certainly special-faced and verily composed-bodied. Those, the Effulgent Divinity created glorious (seers), spread knowledge (Veda) all round. Those, who are the Effulgent Divinity created (original seers), splendid-faced, highest reached, new (fresh) emitter (of the Vedic knowledge), controller of the ten ,organs and most glorious, spread knowledge (Veda) all round and become great (shine) together amongst the noble'. Rigved ,10.62.1-4, also suggest the same.

The above Vedic passages make it inevitably clear that in the beginning of the present cycle of creation, the first or original Vedic seers must have preached the Vedas and spread knowledge among mankind, enabling them to have knowledge of things, essentially knowable by mankind, who,as rational beings and not instinctive, could not by themselves, learn anything to enable them to follow the chartered course of conduct and behaviour in keeping with the Divine plan of things.

प्रेरक प्रसंग

गोलियों की दनादन में : प्राचार्य भगवानदास जी

जब भारत छोड़ो आन्दोलन चल रहा था तब वे डी.ए.वी. कॉलेज लाहौर में आर्ययुवक समाज के प्रधान थे। उन दिनों आर्ययुवक स्वतन्त्रता-संग्राम में बहुत सक्रिय थे। सरकार की दमन नीति के कारण कई परिवारों को बड़ा पिसना पड़ा। लाला जगत-नारायणजी का परिवार उनमें से एक था। तब लाला जगत-नारायण का परिवार दृढ़ आर्यसमाजी परिवार माना जाता था। प्रसंगवश यहाँ लिख दूँ कि जब मुझे गुरुद्वारा सिगरेट केस में यातनाएँ दी जा रही थीं। तब लालाजी की माता लालदेवीजी ने अपने बेटे से कहा, मैं तब तक भोजन नहीं करूँगी जब तक 'जिज्ञासु' का कुछ पता न चले। लालाजी ने वृद्धा माता को बताया कि वह जालन्धर पुलिस के पास नहीं, अमृतसर में है। माता लालदेवी हमारे ही नगर की थीं।

प्रो. भगवानदासजी ने तब ऐसे परिवारों की सहायता के लिए एक गुप्त संस्था बनाई। सेठ राम नारायणजी विरमानी लायलपुर, बाबा गुरुमुखसिंहजी तथा एक और आर्यसेठ (मैं नाम भूल गया) इस संस्था को आर्थिक सहायता देते थे। यह गुप्त संस्था दमन करने वाले अधिकारियों का स्थानान्तरण करने वाले के लिए भी अपने ढंग से चक्र चलाती। अंग्रेज सरकार को पता लग गया कि प्रो. भगवानदास डी.ए.वी. कॉलेज में एक सरकार-विरोधी संस्था का संचालन कर रहे हैं।

एक दिन पुलिस कॉलेज में घुसकर सीधे उस कक्ष में गई, जहाँ भगवानदासजी क्लास लिया करते थे। संयोग ऐसा हुआ कि उस समय एक और प्रोफेसर की आकृति प्रो. भगवानदास से मिलती थी। पुलिस ने आव देखा, न ताव, उस प्रोफेसर पर लाठियाँ बरसानी आरम्भ कर दीं। वह समझ गया कि भगवानदास समझकर मुझे मारा जा रहा है। वह जोर-जोर से चिल्लाया कि मैं भगवानदास नहीं हूँ। पुलिस ने जो करना था सो कर दिया। भगवानदास लहुलुहान होने से बच गए।

यह घटना मुझे सफीदों (जिला जींद हरियाणा) के एक डॉक्टर ने बरनाला में सुनाई थी। प्रिंसिपल भगवानदासजी ने भी इसकी पुष्टि की थी। मैं उस लहुलुहान होने वाले प्राध्यापक का नाम भूल गया। दैनिक प्रताप आदि में मैंने तभी लेखों में यह घटना दी थी। आचार्य सत्यप्रियजी की पुस्तक में भी यह छपी है। यह मत भूलिए कि डी.ए.वी. संस्थाओं का एक ही प्राचार्य देश-धर्म के लिए जेल गया और वह था प्राचार्य भगवानदास। डी.ए.वी. वाले संघर्ष के समय सदा लुक-छुप जाया करते हैं।

इसके पश्चात् लाहौर में एक और महत्त्वपूर्ण घटना घटी। 1947 ई. में देश-विभाजन की घोषणा हो गई। पंजाब भर में बड़े-बड़े नगरों में, स्कूलों और कॉलेजों में जोशीले देशभक्त हिन्दू-सिख छात्रों ने इसके विरुद्ध जुलूस निकाले। मार्च के प्रथम सप्ताह की बात होगी, हमने आर्य हाई स्कूल स्यालकोट में सुना कि लाहौर डी.ए.वी. कॉलेज के वीर छात्रों पर पुलिस ने अंधाधुन्ध गोलियाँ चलाई हैं। कॉलेज के सामने ही तो पुलिस के अधीक्षक का कार्यालय था।

-प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

आर्य समाज इन्द्रा पार्क सम्बद्ध दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, सत्यार्थ प्रकाश परीक्षा संपन्न

रविवार, दिनांक 25 जून 2023 को इन्द्रापार्क आर्य समाज, दिल्ली में सत्यार्थ प्रकाश परीक्षा का आयोजन हुआ। प्रधान श्री प्रीतम सिंह आर्य ने परीक्षा का उद्देश्य महर्षि दयानन्द के अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश के स्वाध्याय, आत्म मंथन, भारतीय दर्शन एवं आर्ष ग्रंथों की परम्परा से परिचित होना बताया।

परीक्षा में 10 प्रश्न पूछे गए इसमें 25 परीक्षार्थियों ने भाग लिया। सुधीर गुप्ता आर्य समाज शाहबाद मोहम्मद पुर ने प्रथम स्थान प्राप्त किया और 5 हजार रू० की पुरस्कार राशि प्राप्त की। भोपाल सिंह योगी आर्य समाज इन्द्रा पार्क ने दूसरा स्थान प्राप्त कर 4500 रू० की राशि प्राप्त की। नारायण सिंह आर्य हनुमान गढ़, राजस्थान ने तीसरा स्थान व 3000 रू० की राशि प्राप्त की। सभी परीक्षार्थियों व पंजीकरण कर्त्ताओं को इन्द्रापार्क आर्य समाज के अधिकारियों प्रीतम सिंह आर्य प्रधान, विनोद आर्य मंत्री, वीरेन्द्र शर्मा कोषाध्यक्ष, भगवान दास, प्रधान नांगलराया आर्य समाज, सुखबीर सिंह आर्य परीक्षा संयोजक द्वारा प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए।

सुखबीर सिंह आर्य मंत्री, दिल्ली आर्य प्रनिनिधि सभा, ने उपरोक्त वर्णित परीक्षा के आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, विभिन्न महानुभावों को परीक्षा हेतु प्रेरित किया। सोशल मीडिया पर खूब प्रचार किया तथा भविष्य में अधिक से अधिक महानुभावों को इससे जोड़ने का विचार रखा। डॉ. मुकेश आर्य 'सुधीर' मंत्री, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य इस अवसर पर उपस्थित हुए तथा उन्होंने भी परीक्षा के प्रचारार्थ सहयोग किया।

विनोद आर्य, मंत्री ने सभी का धन्यवाद किया और कहा कि वर्षा के चलते आपकी परीक्षा में उपस्थिति हमारे लिए सौभाग्य की बात है।

संयोजक **-सुखबीर सिंह आर्य, मंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा**

हवन सामग्री

मात्र 90/- किलो

प्राप्ति हेतु सम्पर्क करें -

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली, मो. 9540040339

पृष्ठ 1 का शेष

सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी 3 से 6 जुलाई के बीच फिजी के लटुका, नासौरी, वकादरा, द्रसा विटुगा, दयानंद नगर, नभुवा सुवा, और नक्सी आदि आर्य समाजों तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं में वेदप्रचार हेतु पहुंचे। वहां के सभी सम्मानित अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्यों सहित आर्यजनों ने विनय आर्य जी का अभिनंदन किया और विनय आर्य जी ने इसके लिए सभी महानुभावों का आभार व्यक्त किया।

फिजी के लुटुका आर्य समाज से वेद प्रचार कार्यक्रमों का आरंभ करते हुए विनय आर्य जी भारत में आयोजित ऐतिहासिक कार्यक्रमों अभूतपूर्व सफलता की उपलब्धियों को उपस्थित आर्यजनों के साथ साझा किया। वहां पर विशेष यज्ञ और सत्संग का आयोजन किया गया, जिसमें सभी अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्यों सहित बच्चे भी उपस्थित रहे। आपने यज्ञ के आध्यात्मिक और साइंटिफिक दोनों पक्षों की व्याख्या करते हुए अपने उद्बोधन में कहा संसार में यज्ञ एक ऐसी वैज्ञानिक प्रक्रिया है, जिसमें हम जितना समर्पित भाव से आहूत करते हैं उसका कई गुना अधिक लाभ हमें प्राप्त होता है। पर्यावरण शुद्धि के लिए यज्ञ पर किए गए रिसर्च का पत्रक भी वहां पर वितरित किया गया। आपने आर्य समाज के गौरवशाली इतिहास का वर्णन करते हुए महर्षि दयानंद सरस्वती की विश्व को देन का विस्तार से प्रचार-प्रसार किया। महर्षि दयानंद सरस्वती की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस को ऐतिहासिक और प्रेरणा का महान पर्व बताते हुए आपने अब तक के हुए कार्यक्रमों की जानकारी भी सभी अधिकारियों को दी।

इसी तरह नासौरी, वकादरा, द्रषा विटुगा, नभुवा सुवा और नक्सी आदि आर्य समाजों में आपने अलग-अलग विषयों पर संदेश देते हुए महर्षि दयानंद सरस्वती जी सहित आर्य समाज के महापुरुषों द्वारा किए गए सेवा कार्यों से प्रेरणा लेने की बात कही। प्रत्येक मनुष्य परमात्मा की श्रेष्ठ कृति है, इसलिए सभी को अपने जीवन में प्रेम, करुणा, दया और परोपकार आदि गुण धारण करके जीवन को सफल बनाना चाहिए, मानव जीवन एक विशेष अवसर है, इसको प्रेम प्रसन्नता के वातावरण में त्याग, तप और साधना के साथ गरिमा प्रदान करनी चाहिए। फिजी में विशेष कार्यक्रमों के आयोजन अपने आपमें अत्यंत प्रेरणाप्रद और सफल सिद्ध हुए।

वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों के साथ ही आर्य विचारधारा को बढ़ावा देते हुए आपने कहा कि आर्य समाज की मान्यता, सिद्धांत और परंपराओं के बल पर ही संपूर्ण मानवजाति सुख, शांति और आनंद से जीवन यापन कर सकती है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति, परिवार और समाज को नियमित पंच महायज्ञों का पालन करना चाहिए और राष्ट्र और मानव सेवा के लिए भी समर्पित होकर कार्य करना चाहिए।

विनय आर्य जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा फिजी द्वारा संचालित सभी शिक्षण संस्थानों और आर्य समाजों का अवलोकन किया और वहां के सभी अधिकारियों को मानव निर्माण में अहम भूमिका का निर्वहन करने के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं प्रदान की। आपने आर्य प्रतिनिधि सभा फिजी के अधिकारियों को इस बात के लिए भी साधुवाद दिया कि जब-जब भारत में अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया जाता है तो हमेशा आर्य समाज फिजी आगे बढ़कर अपना समर्पण भाव प्रदर्शित करता आया है, विश्व व्यापी आर्य समाज में फिजि का योगदान अपने आप में अद्भुत है और हमेशा रहेगा। सभी अधिकारियों ने विनय आर्य जी के आगमन पर प्रसन्नता व्यक्त की और उनके द्वारा वहां पर किए गए प्रचार को लेकर आभार व्यक्त किया। उसके बाद विनय आर्य जी पुनः ऑस्ट्रेलिया के लिए प्रस्थान कर गए और निरंतर वहां पर वेद प्रचार में संलग्न रहे। विनय आर्य जी की यह विदेश यात्रा अत्यंत व्यस्त रहने के साथ ही सफल सिद्ध हुई। आपने इन 22 दिनों में बिना थके और बिना रुके लगातार महर्षि दयानंद सरस्वती की शिक्षाओं, वैदिक धर्म और संस्कृति सहित आर्य समाज के प्रचार-प्रसार और विस्तार में पूरा समय और शक्ति समर्पित की। भारत आगमन पर आपका स्वागत किया गया।

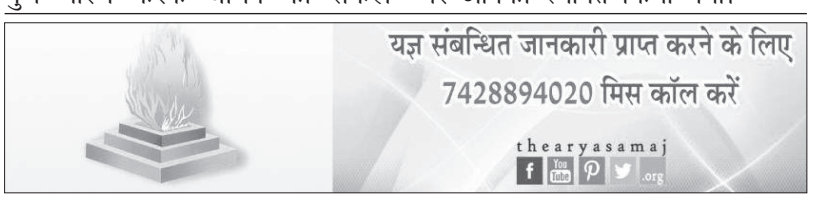

शोक समाचार

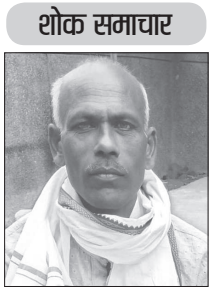

श्री श्याम सुन्दर जी का निधन

आर्य समाज जहांगीर पुरी के मंत्री एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित स्वास्थ्य जागरूकता अभियान के कार्यकर्ता श्री रामभरोसे जी के छोटे भाई श्री श्याम सुन्दर जी का 52 वर्ष की अल्पायु में 07 जुलाई 2023 को अकस्मात निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार 8 जुलाई को आजाद पुर श्मशान घाट पर पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त व परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -संपादक

महर्षि दयानन्द उवाच
परोपकारी एवं प्रेरक शिक्षाएं

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की प्रमुख रचना सत्यार्थ प्रकाश से लेकर उनकी जीवनी, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, संस्कारविधि, व्यवहारभानु, आर्योद्देश्य रत्नमाला, सवमंतव्यामंतव्य प्रकाश, उपदेश मंजरी आदि अनेक ग्रंथों से चयनित परोपकारी और प्रेरक शिक्षाएं आर्य संदेश के नियत नियमित कॉलम में महर्षि दयानंद उवाच के नाम से प्रकाशित की जा रही हैं। सभी पाठकों से अनुरोध है कि महर्षि दयानंद सरस्वती की इन जनकल्याण कारी शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाने के लिए सभी आप इनका सोशल मीडिया पर प्रचार-प्रसार करें और महर्षि के ऋण से उऋण होने का प्रयास करें...

अन्धविश्वासः- यदि आप अपने 'भारत मित्र' समाचार की विद्वानों में प्रतिष्य चाहें तो कर्नल अल्काट आदि के करामात वा मिसमिरेजम (जादू) से अनेकों रोग निवारण आदि नितान्त मिथ्या विषय कभी न छापें। नहीं तो समाचार की प्रतिष्ठा नष्ट हो जाएगी।

(म. दयानन्द प. वि. भाग 2 पृ. 747)

अनार्ष पुस्तकों को दूर करेंः- जिनको अनार्ष दूर छोड़ने को कहा कि न इनको पढ़े न पढ़ावे न इनको देखें क्योंकि इनको देखने से वा सुनने से मनुष्य की बुद्धि बिगड़ जाती है। इससे इन ग्रन्थों को संसार में रहने भी न दें तो बहुत उपकार होय।

(सार्व. म. द. प. व्य. वि. पृ. 34)

अधिकारीः- विद्यावान, बुद्धिमान, धर्मात्मा जितेन्द्रिय सब के हितकारी. सब दुष्ट व्यसन रहित और पक्षपात रहित पुरुष जिस देश में अधिकारी होते हैं, उस देश में सदा सुख और सब श्रेष्ठ व्यवहारों की उन्नति होती जाती है। **(ऋ. दयानन्द के पत्र वि. भाग 1 पृ. 40)**

पृष्ठ 2 का शेष

को समाप्त भी किया जा रहा है बल्कि मानवता को नष्ट किया जा रहा है।

अगर टी.एम.सी. के प्रवक्ताओं द्वारा चुनावी हिंसा में मारे गए लोगों के हृदय विदारक तुलनात्मक बयान की समीक्षा की जाए तो यह ठीक है कि बंगाल में चुनावी हिंसा का इतिहास लंबा है। लेकिन भारत को आजाद हुए 75 वर्ष हो गए हैं, देश ने आजादी का अमृत महोत्सव मनाया है, भारत विश्व की पांचवीं अर्थ व्यवस्था के रूप में आगे आ रहा है। इस उन्नति-प्रगति के दौर में चाहे राज्य स्तर पर या केंद्र के स्तर पर लोकतंत्र के उत्सव चुनाव में हिंसा और अराजकता का कोई स्थान नहीं होना चाहिए। बंगाल में विधानसभा चुनाव के दौरान 16 लोगों की मौत हुई थी और उसके बाद भी 9 हत्याएं हुई थीं। लोकसभा चुनाव 2019 के बाद भी 9 लोगों को वहां जान गंवानी पड़ी थी। 2018 के पंचायत चुनाव में भी बंगाल में 23 लोग मारे गए थे। इससे पहले भी चुनावों में राजनीतिक हत्याएं होती रही हैं। बंगाल में राजनीतिक हत्याओं का इतिहास पांच दशक से ज्यादा पुराना है। 1971 में कांग्रेस के सिद्धार्थ शंकर के शासनकाल में शुरू हुआ हिंसा का दौर आज तक नहीं थमा। कांग्रेस के बाद सी.पी.एम., फिर टी.एम.सी. सत्ता में आई। लंबे समय तक ज्योति बसु, बुद्धदेव भट्टाचार्य और ममता बनर्जी सी.एम. के तौर पर कुर्सी पर काबिज रहीं, मगर इनके राज में हिंसा नहीं रुकी। 2011 में वाम दलों का किला ढहा तब यह उम्मीद जताई गई कि ममता बनर्जी इस रक्तरंजित गाथा पर पूर्णविराम लगाएगी, मगर ऐसा नहीं हुआ। ममता बनर्जी के शासनकाल में भी 12 साल से बंगाल चुनावों में लहूलुहान हो ही रहा है। एन.सी.आर.बी. के आंकड़े बताते हैं कि 10 साल के शुरुआती ममता राज में 150 लोग चुनावी हिंसा के शिकार हुए और इस बार हुई हिंसा ने तो सबको हिलाकर रख दिया है।

राज्यपाल सी.वी. आनंद बोस ने बंगाल पंचायत चुनाव में हुई हिंसा को लेकर कहा कि भ्रष्टाचार और हिंसा बंगाल के दो ही सबसे बडे दुश्मन हैं। वे पंचायत चुनाव के दौरान लगातार ग्राउंड जीरो पर रहे हैं और उन्होंने हिंसा को बहुत नजदीक से देखा है। राज्यपाल ने चुनाव में हिस्सा लेने वाली सभी उम्मीदवारों को बधाई भी दी।

बंगाल पंचायत चुनाव में हिंसा को लेकर यूं तो सभी राजनीतिक दलों ने अपनी-अपनी दलीलें दी हैं। लेकिन सार में अगर कहा जाय तो हर जगह दलीलें नहीं चलती, कभी-कभी दूसरों का विनाश देशकर नेताओं का दिल भी पसीजना चाहिए।

-संपादक

सोमवार 10 जुलाई, 2023 से रविवार 16 जुलाई, 2023
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि. नं0 डी. एल. (एन. डी.)- 11/6071/2021-22-2023
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 12-13-14 जुलाई, 2023 (बुध-वीर-शुक्रवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-2023
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथिः बुधवार 12 जुलाई, 2023

ओ३म्
ARYA PRATINIDHI SABHA AMERICA
Congress of Arya Samajs in North America - Established in 1991
224 Florence, Troy, Michigan 48098, U.S.A.
www.aryasamaj.com | info@aryasamaj.com | fb.com/aryaamerica | twitter.com/AryaAmerica
Celebrating
200th Birth Anniversary of Maharshi Dayanand Saraswati
and
150 YEARS OF ESTABLISHING THE ARYA SAMAJ
33rd Arya Mahasammelan
Annual Vedic Conference and Youth Camp
July 27th - 30th, 2023
Hosted By
Arya Samaj Greater Houston, Texas, U.S.A.
Theme: Walking in the Footprints of Swami Dayanand
Program Highlights
- Interactive Discussions, Seminars by Renowned Vedic Scholars
- Yog and Meditation Sessions
- Parallel Youth Sessions & Workshops
- Agnihotra, Cultural Evenings, Bhajan Sandhya
- Exhibits highlighting Swami Dayanand and his teachings
Register online at https://ams.aryasamaj.com
For More Information - mahasammelan@gmail.com | 347-770-2792
www.aryasamaj.com | AryaAmerica | AryaAmerica | AryaSamaj | AryaAmerica

प्रतिष्ठा में,

JioTV Jio TV+
आर्य समाज का एक मात्र टीवी चैनल
आर्य सन्देश टीवी
Arya Sandesh TV
अब जियो टीवी नेटवर्क पर भी
Jio Set Top Box और JIO मोबाइल App पर उपलब्ध

ओ३म्
असंख्य लोगों का जीवन बदलने वाला अमर ग्रन्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्यार्थ प्रकाश के विभिन्न संस्करण विविध आकार-प्रकार में उपलब्ध हैं।
प्रस्तुत संस्करण की विशेषता :
सुंदर, आकर्षक, स्पष्ट छपाई , सस्ता प्रचार एवं विशेष संस्करण
मुद्रित मूल्य ₹150 प्रचारार्थ मूल्य ₹100
मुद्रित मूल्य ₹1100 प्रचारार्थ मूल्य ₹750
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com
सह प्रकाशक
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
Ph : 011-23360150, 23365959
सत्यार्थ प्रकाश का स्वयं स्वाध्याय करें, दूसरों को प्रेरित करें और अपने इष्ट मित्रों को उपहार स्वरूप भेंट कर इसके प्रचार प्रसार में सहभागी बनें।
Available on
vedicprakashan.com and amazon
bit.ly/vedicprakashan
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

JBM Group
Our milestones are touchstones

TECHNOLOGY DRIVING VALUE
TOWARDS CREATING A
CLEANER | GREENER | SAFER
TOMORROW.
JBM Group - Plot No.9, Institutional Area, Sector 44, Gurgaon – 122 002
91-124-4674500-550 | www.jbmgroup.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व संपादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्पेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001, फोनः 23360150, 23365959, E-mail : aryasabha@yahoo.com, Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
● सम्पादकः धर्मपाल आर्य ● सह सम्पादकः विनय आर्य ● व्यवस्थापकः शिवकुमार मदान ● सह व्यवस्थापकः आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह